[मूलचन्द मीणा]

मैं चेयर से चाहता हूं कि आप शिक्षा मंत्री जी को निर्देश दें कि आप ऐसी यूनीवर्सिटीज के खिलाफ क्यों नहीं कार्यवाही करें, क्यों नहीं ग्रांट को रोकें। मैं इतना ही कहना चाहता हूं। जय हिन्द।

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मैं भी अपने आपको श्री मीणा जी के साथ संबद्ध करता हूं और उसमें यह जोड़ना चाहता हूं कि मैंने एक संशोधन प्रस्तुत किया है इसी शैड्यूल्ड कास्ट्स और शैड्यूल्ड ट्राइब्स के आरक्षण के संबंध में माननीय राष्ट्रपति जी के अभिभाषण पर और जब मैं बोलूं तो मीणा जी उसका समर्थन करेंगे और मेरे साथ मत करेंग। मैं ऐसी आशा उनसे रखता हूं।

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : उपसभाध्यक्ष महोदय, मीणा जी ने विशेष उल्लेख के माध्यम से महत्वपूर्ण प्रश्न की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया है, मैं अपने आपको उससे संबद्ध करना चाहता हूं। जब हाई कोर्ट ने फैसला कर दिया, सुप्रीम कोर्ट ने फैसला कर दिया तो ऐसी स्थिति में हमें न्यायपालिका का सम्मान करना ही चाहिए। साथ ही साथ संविधान में जो व्यवस्था की गई 3·00P.M है, उसका भी पालन होना चाहिए। बहुत आवश्यक है इसलिए इस बात को ध्यान में रखते हुए, इसे गम्भीरता के साथ लेते हुए मेरा सरकार से अनुरोध है कि मीणा जी ने जो विशेष उल्लेख के माध्यम से इस प्रश्न की ओर सरकार का ध्यान आकर्षित किया है उसका सरकार अक्षरशः पालन करे नहीं तो एक असंतोष जब उत्पन्न हो जाता है तो स्थिति बड़ी भयावह हो जाती है। इसलिए उस असंतोष को समाप्त करने के लिए भी सरकार को जल्दी कदम उठाना चाहिए और निर्देश देना चाहिए उस विद्यालय को कि हाई कोर्ट, सुप्रीम कोर्ट ने जो निर्देश दिये हैं उसका पालन अक्षरशः करें।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI): Shrimati Renuka Chowdhury-not here. Shri J. P. Mathur.

COMMUNAL BIAS IN TEXTBOOK—HINDUSTAN KI TAREEKH—PRESCRIBED FOR CLASS IX BY THE WEST BENGAL SECONDARY EDUCATION

श्री जगदीश प्रसाद माथुर (उत्तर प्रदेश) : श्रीमन्, मैं आपके माध्यम से पश्चिम बंगाल की सरकार द्वारा स्वीकृत एक किताब की ओर ध्यान आकर्षित करना चाहता हूं। उस किताब का नाम है "हिन्दुस्तान की तारीख" जो कि वहां के कक्षा 9वीं के लिए वेस्ट बंगाल बोर्ड आफ सेकेंड्री एजुकेशन ने स्वीकृत की है। सबसे बड़ी आपत्ति मुझे यह है कि इस किताब में जो बच्चों की 9वीं कक्षा में पढ़ाई जाती है, हमारे पूजनीय गुरू तेग बहादुर जी का अपमान किया गया है। उसके साथ शिवाजी और राणा प्रताप जैसे नेताओं के विषय में कहा गया है कि छोटे छोटे नेता थे लेकिन हिंदु उनको राष्ट्रीय वीर करके मानने लगे हैं। इसके साथ यह कहा गया है क्योंकि अकबर राजा ने डीइस्लामाईजेशन शुरू कर दिया था, हिंदुओं से दोस्ती की इसलिए हुकूमत गिरी। इसका अर्थ यह निकलता है कि हिंदुस्तान का भला तभी हो सकता है जब इसका इस्लामाइजशन हो। इस किताब के बारे में अखबारों में जो खबरें छपी हैं मैं कुछ वह थोड़े से उद्धरण आपके सामने पढ़ना चाहता हूं। इस किताब का नाम है "हिंदुस्तान की तारीख" लिखने वाले हैं मोहम्मद याकूब, 9वीं कक्षा में जो उर्दू माध्यम के स्कूल्स चलते हैं उनमें पढ़ाई जाती है और स्वीकार की गई है वेस्ट बंगाल बोर्ड आफ सेकेंड्री एजुकेशन से। वे कहते हैं :

"Akbar followed the wrong policy of improper generosity towards Hindus."

आगे कहते

"Ruling this "negation of religion,' the book maintains that this "had such a far-reaching consequence that Hindus and Muslims came together and no difference was left between faith (IMAAN) and heresy (KUFR)."

अकबर ने गोया कुफ्र और ईमान के बीच का भेद खत्म कर दिया था। कहते हैं लेकिन जब औरंगजेब आया उसने दोबारा इस्लामाइजेशन शुरू किया तो इस्लाम बचा और हुकूमत बची। उसके साथ कहते हैं राणा प्रताप और शिवाजी के बारे में कि they were small chieftans.

लेकिन चूंकि अकबर की जिम्मेदारी ठहराते

"Hindus remained inimical to the Islamic state..."

"They had gained in power and influence, but had not forgotten their separate identity and waited for an opportunity to have their own state..."

"Rana Pratap and Shivaji... Although they were ordinary chiefs, Hindus started worshipping them as national heroes..."

यह किताब है जो कि 9वीं कक्षा में पढ़ाई जाती है। गुरु तेग बहादुर के बारे में क्या कहते हैं? गुरु तेग बहादुर के बारे में कहते हैं :

"Aurangzeb's slaughter of the ninth Sikh Guru, Guru Teg Bahadur, is related with relish, bordering on bloodthirstiness."

गुरु तेग बहादुर सिख सम्प्रदाय के गुरु नहीं हैं केवल, सारे हिंदुओं के गुरू हैं, हमारे धार्मिक गुरू हैं, हमारे राजनीतिक नेता हैं। उनके विषय में किताब में लिखा गया है :

"The ninth guru had established a reign of murder and destruction in Punjab."

गुरु तेग बहादुर ने वहां डिस्ट्रक्शन किया, बरबादी की, खूंरेजी की इसलिए, वे आगे कहते हैं :

"When he was arrested and brought before Aurangzeb, he claimed that no sword could harm him. At this, Alamgir ordered the jallad to strike him and the result was as to be expected. His head was severed from his body."

गुरु तेग बहादुर के बारे में इस प्रकार स्कूल की किताब में लिखा जाना कहां तक जायज है। यह केवल एक साम्प्रदायिकता को भड़काने वाला है।

मेरी मांग है इस सरकार से कि वेस्ट बंगाल गवर्नमेंट से कहे कि इस किताब को तुरंत वापस किया जाए, इसको बंद किया जाना चाहिए। गुरु तेग बहादुर हों, राणा प्रताप हों या शिवाजी हों हम उनकी तौहीन बर्दाश्त नहीं कर सकते और अकबर को लेकर आज कहते हैं कि उसने एक साम्प्रदायिक रहित कोशिश की थी, उसका अपमान, और इस्लामाइजेशन का परिप्रेक्ष्य लेना, यह 9वीं कक्षा के बच्चों को पढ़ाना कहां तक उचित है? तो मैं मांग करता हूं, सारा सदन मेरी मांग के साथ शायद शामिल होगा, कि सरकार को चाहिए कि वेस्ट बंगाल गवर्नमेंट से कहे कि इस किताब को वापिस लिया जाना चाहिए।

श्री एस०एस० अहलुवालिया (बिहार): उपसभापति जी, माथुर साहब ने जो मसला उठाया है, मैं उनके साथ पूरा सहमत हूं। यह गुरु तेग बहादुर का मसला ही सिर्फ नहीं है। हम लोगों ने इस सदन के माध्यम से कई बार ऐसे मसले उठाये हैं कि देश के स्वतंत्रता सेनानियों का, देश का जो स्वतंत्रता संग्राम का इतिहास है, या देश में जो संत प्रथा आई या देश में जो जागृति लाने वाले लोग थे, उनके बारे में हमारी आने वाली पुश्तों को बताने की जरूरत है और वह पाठ्य-पुस्तकों के माध्यम से बताने की जरूरत है। अगर वेस्ट बंगाल सरकार ने कोई ऐसी पुस्तक को सिलेबस में बच्चों को पढ़ाने के लिए रखा है—जहां पर गुरू तेग बहादुर को, जिस गुरू तेग बहादुर ने जनेऊ कभी नहीं पहना, जिस ने तिलक कभी नहीं लगाया, जिस गुरू तेग बहादुर ने चोटी कभी नहीं रखी, पर जिस वक्त यहां पर अत्याचार हो रहा था मुगलों का, सवा मन जनेऊ जलता था, तब औरंगजेब का बेटा खाना खाता था, उस वक्त जनेऊ की, जंजू की रक्षा की, तिलक की रक्षा की और चोटी की रक्षा करने के लिए अपनी कुर्बानी दी।

[श्री एस० एस० अहलुवालिया]

उसके बारे में अगर भारत में ही उस गुरु तेग बहादुर के बारे में ऐसे लिखा जाए और स्कूलों में ऐसी किताबें पढ़ाई जायें, तो धिक्कार है ऐसे भारतवासियों पर, जो भारतवासी आज यह कहने पर भी मजबूर हो रहे हैं कि उनके पूर्व पुरुषों ने किस तरह से इस देश की सभ्यता और संस्कृति की रक्षा अपनी कुर्बानी से, अपनी गर्दन कटवा करके की थी।

आज उसके बारे में अगर ऐसी बातें की जाती हैं, तो यह धिक्कारपूर्ण है और जितनी भी भर्त्सना इसकी की जाए, वह कम है।

मैं चाहता हूं कि पूरे सदन को इसका समर्थन करना चाहिए और सरकार से मांग करनी चाहिए कि अगर ऐसी कोई किताब है, उसको वापिस करके उन लोगों पर कड़ी कार्यवाही की जाए, जिन्होंने ऐसी किताब वहां के स्कूलों के पाठ्य-क्रम में लागू की है।

SHRI JAGESH DESAI (Maharashtra): Mr. Vice-Chairman, I fully support the sentiments expressed by the Members. The Government should take action to see that these things are not repeated. I agree with what Mr. Ahluwalia said. It is shameful. If scch things are written about a person who has sacrificed his life, I think, nobody can tolerate that. Please convey our sentiments to the concerned Government.

SHRI MADAN BHATIA (Nominated): Sir, if that book contains any remarks which are derogatory to the great Guru it is not merely a question of this book prohibited; it is a question of prosecuting that man who has written this book because it constitutes a grave penel offence of hurting the sentiments of a particular community. Let me go to that extent. Let us presume for the sake of Indian Penal Code that the great Guru was the great Guru recognised as such by the Sikhs. If any such book has been written containing such remarks which hurt the religious sentiments not only of the Hindus because he sacrificed his life for the Hindus but particularly the sentiments of the Sikhs of whose Guru he was a recognised Guru--I demand that a criminal prosecution should be started against that individual who has written that book and a criminal prosecution should be started against those who have been party to the prescription of this book as a curriculum in the various schools. This is most important, otherwise just prohibiting this book means neither here nor there. This is the demand that I make, Sir.

SHRI V. NARAYANASAMY (Pondicherry): I will take only half a minute. I fully agree with the sentiments exprssed by Mathurji, Ahluwaliaji and other friends. Nowadays, in various States the books for educational institutions are published according to the political stand of the State Government concerned. This is deplorable. Sir, hurting the sentiments of any religion is really a matter of great concern for everybody. In the same way, in the States of Madhya Pradesh, UP and Rajasthan where BJP was ruling, many books were published which have hurt the sentiments of other religions.

श्री संघ प्रिय गौतम (उत्तर प्रदेश) : गड़े मुर्दे क्यों उखाड़ रहे हो ? (व्यवधान)

SHRI V. NARAYANASAMY: It is a reality.

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI): Please be brief. It is a special mention.

SHRI V. NARAYANASAMY: I am very happy that Mathurji has raised this issue. I want that his party should adopt the same method. Other communities should not be insulted.

श्री राम नरेश यादव (उत्तर प्रदेश) : मैं भी इससे अपने को एसोसिएट करता हूं।

THE VICE-CHAIRMAN (SHRI SYED SIBTEY RAZI): You have already associated.

श्री राम नरेश यादव : मैं तो चाहता हूं कि सारी सरकारें इस पर ध्यान दें। केन्द्र सरकार भी ध्यान दे और सारी प्रदेश सरकारें भी इस पर ध्यान दें।

उपसभाध्यक्ष (श्री सैयद सिब्ते रजी): यह एक बहुत ही संवेदनशील और महत्वपूर्ण मुद्दा है। पिछले कुछ वर्षों से देखने में आ रहा है कि स्कूल जाने वाले बच्चों को कुछ इस प्रकार का उलट-पुलट के इतिहास पढ़ाने का प्रयास किया जा रहा है जिससे उनके मन और मस्तिष्क पर कुप्रभाव पड़ सकता है और हमारी राष्ट्रीय एकता, अखंडता और सांप्रदायिक सौहार्द जो है उस पर प्रभाव पड़ सकता है। इसलिए मैं समझता हूं कि केन्द्रीय सरकार को मैं यह निर्देश देना चाहूंगा कि इस मामले को देखे और जिन-जिन प्रदेशों में इस प्रकार का इतिहास से खिलवाड़ करने की कोशिश की गई है, उन सब का मूल्यांकन करे और कोशिश करे कि अपने स्तर से इन चीजों को आगे कैसे रोका जा सकता है। चाहे वह वेस्ट बंगाल की बात हो या किसी और प्रदेश की बात हो।

Need to project the cultural heritage of Arissa in the Programmes of Doordarshan and need for a Second T.V. Channel at Bhubaneshwar

SHRI SARADA MOHANTY (Orissa): Mr. Vice-Chairman, Sir, my special mention is regarding negligence of Orissa Doordarshan and the All India Radio. Although the State of Orissa is a backward State, it is rich in cultural heritage. I am sorry to say that the cultural heritage of Orissa is not being projected adequately in the programmes of Doordarshan. More producers and directors of films and telefilms of Orissa may be empanelled and given scope for production of themes on culture, history and tradition of Orissa.

The transmitters provide 84 per cent to the national coverage. But three high power and 22 low power T.V. transmitters including one transponder provide only a coverage of 77 per cent. For the Eighth Plan, proposals have been submitted by the State Government for installation of another 33 lower power T.V. transmitters to provide 100 per cent coverage of the population but no action has been taken in this regard. Orissa is the only State in the country where there is no All India Radio Station. A second channel of Doordarshan at Bhubaneswar is absolutely necessary. The State of Orissa should have a second channel at its capital during the first year of the Eighth Plan. To provide an auxiliary studio at Sambalpur with the advent of Satellite Transmission Service, an electronic field unit has been stationed at Sambalpur. But this arrangement has not been very useful due to want of editing facilities at Sambalpur. Apart from this, the arrangement has not helped the artistes from the western districts of Orissa to record their programmes at Sambalpur. They have to come all the way to Bhubaneswar to record their programmes. Doordarshan Kendra has not been able to provide adequate number of programmes projecting the rich cultural traditions of the western and southern districts of Orissa. The Doordarshan Kendra at Bhubaneswar is unable to produce programmes at short notice. Hence an auxiliary T.V. studio be provided at Sambalpur and Jeypur for production of programmes depicting two culturally rich and significant regions of the State like in Nagpur in Maharashtra and Vijayawada in Andhra Pradesh. Transfer of programme staff of Sambalpur has given rise to the misconception of the people of Sambalpur that the T.V. transmitter, instead of being provided with studio facilities, will be closed down. I want that the Government should take proper steps in this regard. News clippings and success stories have been fed to Doordarshan by the Electronics News Gathering Unit of the Government of Orissa at Bhubaneswar. Strategies may be worked out for the E.N.G. units of Doordarshan and the State Government to work in close collaboration. The number of E.N.G. units of Doordarshan